दिल्ली सल्तनत के तहत प्रशासन, जिसने मध्ययुगीन काल के दौरान भारतीय उपमहाद्वीप के कुछ हिस्सों पर शासन किया था, एक केंद्रीकृत और सत्तावादी प्रणाली की विशेषता थी। विभिन्न राजवंशों के सत्ता में आने के साथ-साथ समय के साथ प्रशासनिक संरचना विकसित हुई। दिल्ली सल्तनत के तहत प्रशासन की प्रमुख विशेषताएं इस प्रकार हैं:

1. केंद्रीकृत प्राधिकरण**:**

- दिल्ली सल्तनत की विशेषता मजबूत केंद्रीय सत्ता थी, जिसमें सुल्तान पूर्ण शासक था। सुल्तान के पास राजनीतिक और धार्मिक दोनों अधिकार थे।

2. प्रांतीय प्रशासन**:**

- साम्राज्य को प्रांतों या क्षेत्रों में विभाजित किया गया था, प्रत्येक प्रांतीय गवर्नर या अमीरों द्वारा शासित था।
- ये गवर्नर सुल्तान द्वारा नियुक्त किए जाते थे और अपने-अपने क्षेत्रों में कानून और व्यवस्था बनाए रखने, कर एकत्र करने और न्याय प्रशासन करने के लिए जिम्मेदार थे।

3. राजस्व संग्रह**:**

- राजस्व संग्रहण प्रशासन का एक महत्वपूर्ण पहलू था। राजस्व के प्राथमिक स्रोत भूमि राजस्व (खराज के रूप में जाना जाता है), सीमा शुल्क और अन्य कर थे।
- दीवान और मुकद्दम जैसे राजस्व अधिकारी, राजस्व मूल्यांकन और संग्रह के लिए जिम्मेदार थे।

4. सैन्य प्रशासन**:**

- सेना ने प्रशासन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सुल्तान के पास एक स्थायी सेना थी, जिसमें घुड़सवार सेना, पैदल सेना और हाथी शामिल थे।
- सैन्य कमांडरों और जनरलों के पास प्रशासन में प्रमुख पद थे, और वे रक्षा और सुरक्षा के लिए जिम्मेदार थे।

5. प्रशासनिक भाषा**:**

- दिल्ली सल्तनत के तहत फ़ारसी प्रशासनिक भाषा बन गई। आधिकारिक रिकॉर्ड और दस्तावेज़ फ़ारसी में बनाए रखे जाते थे।

6. कानूनी व्यवस्था**:**

- इस्लामी कानून (शरिया) ने कानूनी प्रणाली के आधार के रूप में कार्य किया। इस्लामी न्यायशास्त्र के अनुसार न्याय प्रदान करने के लिए काजी (इस्लामी न्यायाधीश) अदालतों की अध्यक्षता करते थे।
- कानूनी मामलों में अंतिम अधिकार सुल्तान के पास था और उसके फैसले अक्सर इस्लामी सिद्धांतों से प्रभावित होते थे।

7. इंटेलिजेंस नेटवर्क**:**

- सल्तनत के पास एक सुव्यवस्थित ख़ुफ़िया नेटवर्क था जिसे "बारिड्स" या "जासूस" के नाम से जाना जाता था। ये जासूस सुल्तान को साम्राज्य के भीतर की घटनाओं और संभावित खतरों के बारे में जानकारी प्रदान करते थे।

8. सिक्का निर्माण**:**

- सल्तनत ने अपना स्वयं का सिक्का जारी किया, जिस पर आमतौर पर सुल्तान का नाम और उपाधियाँ अंकित थीं। विभिन्न शासकों के अधीन सिक्कों का डिज़ाइन भिन्न-भिन्न था।

9. कला और वास्तुकला का संरक्षण**:**

- कई सुल्तान कला और वास्तुकला के संरक्षक थे, जिसके कारण उन्होंने शानदार मस्जिदों, किलों, महलों और मकबरों का निर्माण कराया। दिल्ली में कुतुब मीनार और अलाई दरवाजा इसके उल्लेखनीय उदाहरण हैं।

10. प्रशासनिक सुधार**:**

- विभिन्न सुल्तानों ने शासन और दक्षता में सुधार के लिए प्रशासनिक सुधार पेश किए। उल्लेखनीय उदाहरणों में अलाउद्दीन खिलजी के बाजार नियम और फिरोज शाह तुगलक की सिंचाई और नहर परियोजनाएं शामिल हैं।

11. सामाजिक संरचना**:**

- दिल्ली सल्तनत के अधीन समाज विभिन्न सामाजिक और धार्मिक समूहों में विभाजित था, जिसमें मुस्लिम शासक अभिजात वर्ग थे और हिंदू बहुसंख्यक आबादी वाले थे।

दिल्ली सल्तनत के अधीन प्रशासन क्षेत्र की बदलती गतिशीलता और विभिन्न शासकों की प्राथमिकताओं के साथ विकसित हुआ। जबकि इस प्रणाली को केंद्रीकृत प्राधिकरण और इस्लामी कानूनी सिद्धांतों द्वारा चिह्नित किया गया था, इसने स्थानीय परिस्थितियों और उपमहाद्वीप की विविध आबादी के लिए अनुकूलनशीलता भी प्रदर्शित की।